International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 01-04

भीष्म साहनी का कालजयी उपन्यास तमस

डॉ• दिलीप कुमार झा
फोर्टगलास्टर विद्यालय (उ• मा•), राधानगर, हावडा, पश्चिम बंगाल, कोलकाता, भारत।

सारांश
भीष्म साहनी हिन्दी साहित्य के कालजयी साहित्यकार है। उनका उपन्यास 'तमस' एक कालजयी उपन्यास है। यह उपन्यास सबसे प्रसिद्ध एंव लोकप्रिय है। भीष्म साहनी इस उपन्यास को लिखकर हिन्दी साहित्य– जगत में लोकप्रिय हो गये। 'तमस' को 1975 ई में गोविन्द निहलानी ने दूरदर्शन धारावाहिक तथा फिल्म भी बनाई थी। प्रस्तुत शोध पत्र में कालजयी उपन्यास के रूप में 'तमस' पर विचार गया है।

मूल शब्दः भीष्म साहनी, 'तमस'।

प्रस्तावना
'तमस' की कथापरिधि में अप्रैल 1947 के समय में पंजाब के जिले को परिवेश के रूप में लिया गया है। 'तमस' कुल पाँच दिनों की कहानी को लेकर बुना गया उपन्यास है परंतु कथा में जो प्रसंग–संदर्भ उभरे है, उससे यह पाँच दिनो की कथा न होकर बीसवी सदी के हिन्दुस्तान के अब तक के लगभग सौ वर्षो की कथा हो जाती है। संपूर्ण कथावस्तु दो खंडों में विभक्त है। पहले खंड में कुल तेरह प्रकरण है। दूसरा खंड गाँव पर केंद्रित है। 'तमस' उपन्यास का रचनात्मक संगठन कलात्मक संधान की दृष्टि से प्रशंसनीय है। इस में प्रस्तुत संवाद और नाटकीय तत्व प्रभावकारी है। भाषा, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के मिश्रित रूप वाली है। भाषायी अनुशासन कथा के प्रभाव को गहराता है। कथ्य के अनुरूप वर्णनात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, एंव विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग सर्जक के शिल्प कौशल को उजागर करता है।

साम्प्रदायिकता–एक विकार
भीष्म साहनी नें 'तमस' उपन्यास में साम्प्रदायिकता की समस्या को उठाया है।
साम्प्रदायिकता क्या है ? "साम्प्रदायिकता एक राजनीति है। किसी सम्प्रदाय को धार्मिक संगठन का रूप देना ही साम्प्रदायिकता है।" [1] किसी विशेष प्रकार की संस्कृति एंव धर्म को दूसरों पर आरोपित करने की भावना या धर्म अथवा संस्कृति के आधार पर पक्षपातपूर्ण व्यवहार करने की क्रिया साम्प्रदायिकता है। साम्प्रदायिकता के कारण दंगे एंव विभाजन जैसे कुपरिणामों को भोगना पड़ता है।
भारत की आजादी के ठीक पहले साम्प्रदायिकता की वैसाखियाँ लगाकर पाशविकता का जो नंगा नाच इस देश में नाचा गया था, उसका अंतरंग चित्रण भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में किया है। कालविस्तार की दृष्टि से 'तमस' की कहानी केवल पाँच दिनों की है इसके बावजूद इसे भीष्म साहनी ने इस खूबी से चुना है कि साम्प्रदायिकता का हर पहलू उदधाटित हो जाता है। भीष्म साहनी ने आजादी से पहले हुए सांप्रदायिक दंगों को आधार बनाकर इस समस्या का सूक्ष्म विश्लेषण किया है और उन मनोवृत्तियों को उधाड़कर सामने रखा है जो विकृतियों का परिणाम जनसाधारण को भोगने के लिए विवश करती है। अमरकांत के शब्दों में, "साम्प्रदायिकता जैसै नाजुक विषय पर सही दृष्टि से लिखने के लिए जिस अपरिसीम धैर्य की जरूरत है, उसका आभास इस रचना ('तमस') को पढ़कर ही हो सकता है। पंजाब की दंगो पर रामानंद सागर की रचना और 'इंसान मर गया' तथा यशपाल की रचना 'झूठासच' दो महत्वपूर्ण कृतियाँ है। सागर की रचना के हिला देने वाले प्रसंग अंत में एक सस्ती भावुकता में पिछड़ गए है। 'झुठासच' मे विवरणात्मक विस्तार है और वह यथातथ्यता के अधिक निकट पहुँच गया है। इन दानां रचनकारों ने कच्चे माल की 'मैन्युफैक्चरिंग' मेहनत और धैर्य के साथ नही की है। पर भीष्म साहनी इस रचना में एक अदभुत शिल्पी के रूप में उभर कर आए है।"[2]
भीष्म साहनी ने 'तमस' लिखकर यह सिद्ध कर दिया कि स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय जनमानस के मस्तिष्क पर अभी भी साम्प्रदायिकता जहर छाया हुआ है। भीष्म साहनी ने इस समस्या का बड़ी बारीकी से निरीक्षण किया है। प्रसिद्ध आलोचक वीरेन्द्र मोहन ने लिखा है, "यह है साम्प्रदायिकता का जहर जिसमें सामान्यजन तबाह होता है।"[3]
अंग्रेज उपनिवेशवादी साम्प्रदायिकता का योजनाबद्ध ढंग से उत्कोचित कर रहे थे। पर भीष्म साहनी एक महत्वपूर्ण रचनाकार है और उनकी सतेज दृष्टि सांप्रदायिकता की तह तक पहुँचाती है। वे उसके मूल की तलाश में उपनिवेशवादियों तक ही रूक नही जाते है। एक राजनेता और रचनाकार में फर्क होता है और यह फर्क यहाँ दिखाई पड़ता है। साम्प्रदायिकता एक सामाजिक व्यवस्था के तहत रची गई मानसिकता से उत्पन्न होती है। भारत में मध्यकाल से ही जो सामाजिक व्यवस्था की रचना हुई उसमें काम का विभाजन संप्रदाय के आधार पर हो गया। उपन्यासकार के अनुसार 'शहर में सब काम बँटे हूए थे। कपड़े की ज्यादातर दूकाने हिन्दूओं की थी, जूतों की मुसलमानों की, मोटरो–लारियों का सब काम मुसलमानों के हाथ मे था, अनाज का काम हिन्दूओं के हाथ में।"[4]
इस पेशे के विभाजन से बढ़कर एक सांस्कृतिक विभाजन भी इन दोनो कौमो के बीच स्पष्ट ही है। रिचर्ड अपनी पत्नी को समझाते हूए कहता है कि "उसके नाम से, फिर उसकी छोटी सी दाढ़ी से, उसके पहनावे से भी, फिर वह नमाज पढ़ता हैए यहाँ तक कि उसके खान– पान के तरीके भी अलग है।"[5] फिर रिचर्ड लीजा को नाम का अंतर समझाते हूए कहता है, "मुस्लमानो के नाम के अंत मे अली, दीन, अहमद, ऐसे – ऐसे शब्द लगे रहते है जबकि हिन्दूओं के नामों के पीछे ऐसे शब्द लाल चंद राम लगे रहते है। रोशनलाल होगा तो हिन्दू, रोशनदीन होगा तो मुस्लमान, इकबाल चन्द होगा

तो हिन्दू और इकबाल अहमद होगा तो मुस्लमान।"[6] यह अंतर दो कौनो के सांस्कृतिक पार्थक्य के कारण है और सबसे बढ़कर साम्प्रदायिकता के अधिक कारण भी कम नही है। "लोग परायी सम्पति हड़पने के लिए भी दंगा कराते है। लाखे की सौदे बाजी हमला रोकने की शर्त पर करते है। एक आक्रामक तिजारतीए वहशी सभ्यता साम्प्रदायिकता को बढ़ावा आर्थिक लोभ से देती है। दूसरे के घर और जयदाद को हथिया लेना उसका लक्ष्य होता है। वही कही इसके मूल मे रोमांस की प्रेरणा रहती है। साम्प्रदायिक फिसाद के कारण केवल जज्बात नही होते वरन आर्थिक भी होते है। आदमी किन–किन कारणों से क्या–क्या नही करता है।"[7]

साम्प्रदायिकता एक सामाजिक व्यवस्था में रची मानसिकता से उत्पन्न होती है। पंद्रह साल के रणवीर के युवा मन की रचना ऐसे ही परिवेश में हुई थी। यथा रणवीर की आँखों के सामने बार–बार म्लेच्छ घूम जाते थे। "पड़ोस के किनारे बैठा मोची म्लेच्छ है। घर के सामने टाँगा हाँकनेवाला गाड़ीवान म्लेच्छ है, मेरी ही कक्षा में पढ़ने वाला हमीद म्लेच्छ है, गली में मंजीफा माँगनेवाला फकीर म्लंच्छ है, पड़ोस में रहनेवाला परिवार म्लेच्छ का है।"[8]

यही सच सामाजिक संदर्भ में विकसित हुआ है। "साम्प्रदायिकता हत्या किसी कारण से नही होता है। हत्या हत्या के लिए की जाती है। हत्या का एक उत्सव होता है। हत्या शील का अंग बन जाती है। 'तमस' के रणवीर का, देवव्रत मास्टर जी द्वारा मुर्गी काटने का अभ्यास करना – ऐसी ही घटना है। ऐसे प्रशिक्षण के बिना कोई आकरण हत्या नही कर सकता है। रणवीर जब मास्टर जी के आदेश पर दीक्षा लेने से पहले मुर्गी को काटता है तब अमानुषिकता दृढ़ होती है। साम्प्रदायिकता का हर खेल अमानुषिकता को दृढ़ करता है। रघुनाथ का मित्र है शहनबाज ऐसा मित्र है जो बलवा के समय अपनी जान पर खतरा उठाकर भी उसके घर उसकी पत्नी के आभूषण का बक्सा निकालने जाता है पर अवचेतन साम्प्रदायिकता के धक्के में उसके सेवक मिलकी को सिढ़ियों पर से जोर से धकेल देता है और मिलकी की पीठ टूट जाती है। यह प्रसंग एक मनोवैज्ञानिक निर्माण है। भीतर उठता सांप्रदायिकता का जहर उफन उठता है। 'तमस' उपन्यास में अमानुषिकता के बड़े प्रसंग अन्यत्र है पर शाहनबाज का मिलकी को अकारण धकेल देना साम्प्रदायिकता के अमानुषिक जहर का शीर्ष बिन्दु मानना चाहिए। यह जहर जब आत्मा में प्रवेश कर जाता है तब इसी प्रकार यों ही उफन पड़ता है। उसी प्रकार जब इश्रफरोश की हत्या जिस मासूमियत के इर्द–गिर्द बुनी गई है वह एक अद्वितीय निर्माण है। ऐसे बलवे के दौरान निर्दोष कमजोर और बूढ़े लोग ही मर जाते है। वत्सल इश्रफरोश और बूढ़ा लोहार करीमबक्श मारा जाता है।"[9]

तमस के तमस का चित्रण

'तमस' उपन्यास के आंरम्भ में हमारा परिचय नत्थू से होता है जो एक बदरंग, कँटीले और तोंदियल सूअर को मारने की लंबी, उबाऊ और थका देने वाली प्रक्रिया में संलग्न है। मुरादअली नामक कमेटी के कारिन्दे ने पाँच का एक नोट उसकी जेब में डालते हुए यह काम सौपा था– "हमारे सालोतरी साहब को एक मरा हुआ सूअर चाहिए। __ इधर पिगरी मे सूअर बहुत घूमते है। एक सूअर को इधर कोठरी के अंदर कर लो और उसे काट डालो।"[10] बाद में यही सूअर मस्जिद के सामने फेकवा दिया जाता है। इस कर्मकाडं का सूत्रधार कौन है, यह बाद में उदघाटित होता है। मस्जिद में सूअर का शव देखकर मुसलमान उत्तेजित हो जाते है। फिर एक गाय की हत्या हो जाती है। हिन्दू भी भड़क उठते है। माहौल में एक तनावपूर्ण संवेदनहीनता व्याप्त हो जाती है। अफवाहें और खुसर–फुसर करती हुई कानाफूसियाँ हवा में फैलने लगती है। संदेह, अविश्वास, असुरक्षा के भाव जोर पकड़ लेते है। तनाव की यह स्थिति गाँवों, कस्बो और शहरो तक महमारी की तरह फैलने लगती है। यही तनावपूर्ण संवादहीनता की स्थिति ही धीरे–धीरे साम्प्रदायिक दंगे के रूप में भड़क उठती है। दोनो ओर से घात–प्रतिघात, हिंसा–प्रतिहिंसा आदि की क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं द्वारा यही दंगा एक वीभत्स और अमानवीय नरसंहार में बदल जाता है। "तमस कहाँ नही है ? बाबू को केवल आँकड़े चाहिए, उसे दर्द में कोई दिलचस्पी नही है। सरदार जी को पत्नी के डूबने का गम नही है, गम है पाँच–पाँच तोले के कड़े का साथ चले जाने का। अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर को कुएँ में डुबी औरत में कोई दिलचस्पी नही है, दिलचस्पी केवल कुएँ के पास के लार्क पक्षी में है। यह सौन्दर्यबोध की अमानुषिकता है। तमस कहाँ नही है? उनकी रचनात्मकता का स्त्रोत इसी तमस की तलाश में निहित है। उनका रचनाकार यह महसूस करता है कि अंधकार चतुर्दिक है। उपनिवेश में रहनेवाले देशी लोगों के हृदय में तमस है। उपनिवेशवादियों का तमस और देशी लोगों का तमस मिलकर एकाकार हो जाता है। यह पूरा तमस इस बात को समझने में अपने समय से आगे है कि तमस केवल बाहर से अंदर आयातित नही है वरन उसकी अपनी स्वायत्तता है और यह अंदर से भी आक्रमण करता है। टुच्चे लोग अंधकार रचते है। अंधकार केवल यूरोपीय ही नही वरन गैर यूरोपीय भी है।"[11]

"तमस की कथा तो एक ऐतिहासिक तथ्य है उस वक्त का जब अंग्रेजी हुकूमत सत्ता हस्तांतरण के साथ–साथ विभाजन की कूटनीति कर रही थी। 'तमस' में नफरत नही, नफरत पैदा करने वालों द्वारा रचा गया अंधकार है। आले में रखे एक दीये की झपकी से इस उपन्यास का प्रारम्भ ऐंसा लगता है कि जैसे आगामी तमस की भविष्यवाणी कर रहा, हो यह झपकी लेता दिया। एक ओर आजादी की गूजँ में देशराज, बख्शी जी, शंकर, अजीज मेहता जी, मास्टर रामदास है जिनमे, कही विभाजन की कोई रेखा दिखाई नही देती, दूसरी ओर मुरादअली, कालू और सालोतरी है जो सूअर की लाश से मस्जिद का तमस रचते है और गाय की लाश से हिन्दूओं के मन का तमस। अंग्रेजी हुकुमत का गुलाम रिचर्ड इस हिल्दू–मुस्लिम नफरत की गाय–सूअर सियासत का तमस उत्पन करता है।"[12]

'तमस' का तमस न हिन्दु पैदा करता है, न सिख, न मुसलमान, बल्कि बड़े लाउड ढ़ंग से भीष्म जी ने इस तथ्य को उगलवा दिया है जब करीमखान कहता है– "हाकिमों के मन की थाह पाना आम आदमी के बस की बात नही है। हाकिम दूर की सोचता है जो कुछ वह देखता है उसे आम इंसान नही देख पाता।"[13] अंग्रेज को तो एक देश के, एक धरती के, एक नक्शे के, एक इतिहास और एक भूगोल के, दो टूकड़े करने थे, और वह तभी कर सकता था जब वह कौमों के बीच नफरत बो दे। इसीलिए बख्शी जी जैसे तपे हुए नेता को कहना पड़ा फिसाद करने वाले भी अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज, भूखा मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घर बसानेवाला भी अंग्रेज, फिर बाजी ले गया अंग्रेज।"[14]

"यदि आजादी के साढ़े पाँच दशक में कोई न कोई तमस शेष है चाहे व साम्प्रदायिकता हो, जातिवाद का हो आंतकवाद या दंगों का हो तो लगता है भीष्म साहनी के नास्टेल्जिया का तमस आज भी उसी प्रकार फैला हुआ है। तमस किसी का भी हो किसी ने भी रचा हो लेकिन एक सर्जक की समूची चेतना उसके अंदर का समूचा भावराग, उसके अंदर की समूची संवेदना यदि ऐसे तमस से विचलित होती है तो यह बेचैनी 'तमस' की कथा बनकर प्रकट होती है। 'तमस' अपने ही अंदर के अंधकार से साक्षात्कार है। घोर

से घोर तिमिर में भी जिन्दा रह सकता है मनुष्यता का वह संवेदन जो अपने अंदर के 'तमस' को पहचान लेता है। सूअर मारने जैसे प्रकरण को जिन बारीक विवरणों के समय भीष्म जी ने रचा है, अंत तक 'तमस' के रूपक का जिस प्रकार निर्वाह किया है उससे यह उपन्यास अब मात्र किसी कालविशेष की कथा न रहकर हमारे हर सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक सोच और व्यवहार का प्रासंगिक दस्तावेज बन गया है। मुल्ला मियाँ मिशालची हो या पंडित पादरी पुजारी जब तक मनुष्य के अंदर धर्म देश जाति और घृणा का अंधकार जारी रहेगा– कोई तमस नही छटैगा– चाहे वह हमारे अंदर का तमस हो या बाहर का।"[15]

स्थापत्य

'तमस' उपन्यास का सबसे सशक्त पहल इसका सिनेमाई लहजा है। लेखक माहौल को बुनता हुआ विविध मानसिकताओं को, खामोशी को, तात्कालिकता को थ्री 'डायमेंशन्स' में ऐसे रचता है कि सुखद आश्चर्य के संग प्रत्येक स्थिति की शिनाख्त पाठक करने लगता है। तमस उपन्यास वहाँ तो और करीब दिख पड़ता है जहाँ लीजा और लेखक स्पेस को भी साध रहा है– "दिन भर अकेले इन्ही को देख–देखकर वह एक कमरे से दूसरे कमरे में चक्कर काटती रहती थी। वह बुद्ध की प्रतिमा के सामने जा खड़ी हुई। मनबहलाव के लिए उसने बिजली का बटन दबाया। सचमुच बुद्ध के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान खिल उठी थी। उसने बिजली बुझा दी मुस्कान ओझल हो गयी। उसने फिर से बटन दबाया मुस्कान फिर से लौट आयी।"[16]

निष्कर्ष

"भीष्म साहनी कालजयी साहित्यकार है। उनका उपन्यास 'तमस' एक कालजयी उपन्यास है। भीष्म साहनी को विशेष ख्याति उनके उपन्यास 'तमस' के कारण मिली। देश के विभाजन पर हिन्दी, उर्दु, पंजाबी और बंगाली भाषाओं में बहुत कुछ लिखा गया है। यशपाल का 'झुठासच' इस पृष्ठभुमि में लिखी गई सबसे वृहद रचना है। 'तमस' देश–विभाजन की त्रासदी के लगभग तीन दशक के बाद प्रकाशित हुआ था। आज भी इस उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगता है कि इतने अंतराल के बाद भी इससे कथ्य की सर्जनात्मक संभावनाएँ चुकी नही है। 'तमस' की जो बात सबसे अधिक प्रभावित करती है वह है अपने कथ्य के प्रति लेखक की गहरी समझ और आत्मीयता। लेखक ने जिस ढंग से स्थितियों को उभारा है जिस सूक्ष्मता से चरित्रो का सृजन किया है और जिस अतरंग जानकारी से घटनाओं को नियोजित किया है उससे उस त्रासदी को उसके क्रूरतम रूप में रेखांकित किया जा सका है। तमस पाँच दिनों की कहानी है किन्तु उन पाँच दिनों के पीछे हमे बहुत सारे दिन वर्ष और शताब्दियाँ झाँकती हुई दिखाई देती है। तमस एक सच्चाई स्थापित करता है कि जो समाज अपनी ऐतिहासिक त्रासदियों से सबक नही लेता है वह सदा तमस से ग्रस्त रहता है और सात्विक, राजस ओजस व प्रकाश से सदा वंचित रहता है। साम्प्रदायिक दहशत का बिष–बीज बोनेवाले उपनिवेशक हो या उपनिवेशित बाहर के या अंदर के हो जहरीली फसल काटनी पड़ती है निर्दोषों, दुर्बलो, तथा गरीबो को आनेवाली पीढ़ीयों को व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा मानवीय स्तरों पर। इसी सत्यबोध के साथ तमस साम्प्रदायिकता तथा उपनिवेशवादि शक्तियों की साँठ–गाँठ को उजागर करता हुआ तमस से बाहर प्रस्थान का निर्देश भी करता है।

"तमस के विन्यास पर कई तरह की आपत्तियाँ की गई है। भारत भूषण अग्रवाल और कई अन्य ने इसकी कथा को बिखरा हुआ माना है। इनका कहना है कि इसकी कोई एक कथा नही है। यह अनेक कथाओं का समुच्च्य है। तमस के रूप विधान के संदर्भ में यह महत्वपुर्ण नही है कि इसकी कथा टुकड़े–टुकड़े में सामने आती है। विभाजित होने के बाद भी इन कहानियों में कोई रचनात्मक अन्तरसूत्रता है अथवा नही यह देखना महत्वपूर्ण है। 'तमस' के बारे में यह तथ्य मुल्यवान है कि अर्न्तवस्तुए संवेदना, भाषा, विचार प्रत्येक दृष्टि से यह अविच्छिन्न है। इसका एक समग्र– समन्वित रूप बनता है – महत्वपूर्ण यह है।"[17]

साहित्य के रूप ही समय–समय पर पुराने नही हो जाते, पाठकीय अभिरूचि पाठकीय आस्वाद–बोध भी पुराने पड़ जाते है इसलीए इनमे परिवर्तन लाने होते है। रचनाओं की नई रूप प्रविधियाँ जब आस्वाद संस्कार में विक्षोभ पैदा करती है तो सहसा असंतोष के भाव जन्म लेते है। तमस भी अपने समय की एक ऐसी रचना रही है जिसने नए शिल्प के प्रति तात्कालिक विरोध के बाद भी आर्कषण का नया वातावरण था और कथा–आस्वाद का नया संस्कार भी। वर्णन कौशल और उसकी भाषा का एक अत्यन्त प्रभावशाली सौन्दर्य तमस की उपलब्धि है। भीष्म साहनी के पास ऐसी जीवित भाषा है जिसमे जिंदगी की धड़कनों और समाज की गतियों को साफ–साफ सुना और अनुभव किया जा सकता है। इतिहास के एक बड़े हाहाकार और आर्तनाद को कविता की भाषा और कविता के विम्बों में नही सुनाया–दिखाया जा सकता। इसके लिए संवेदना की तरह ही जिन्दगी की कोख से पैदा होने वाली भाषा की जरूरत होती है। ऐसी भाषा में ऐसे वर्णन की भी जरूरत होती है कि पाठक के सारे मानसिक शंकाय खुल जाएँ। पाठक की आत्मा के मानवीय कण भासमान हो जाएँ। कुछ–कुछ इसी तरह की जरूरत को पूरा करने के प्रयास में लिखा गया उपन्यास है। इसमें भाषा का वही रूप है जो यथार्थ संवेदन के अनुरूप है।

"उपन्यास के संदर्भ में वर्णन – विस्तार (डिटेल्स) का बहुत महत्व है। यह दीर्घ आकार वाली विधा है। इसमें रचनाकार और पाठक दोनो के लिए वर्णन–विस्तार में जाने का अवकाश है। भीष्म साहनी ने उपन्यास आंरम्भ होते ही इस प्रविधि के सर्जनात्मक उत्कर्ष का चम्तकारिक साक्षत्कार करा दिया है। वर्णन–कौशल का ऐसा अभिभूतकारी साक्ष्य प्रायः दुर्लभ है।"[18]

यथार्थवाद के यात्रिंक अनुकर्ताओं ने सृजनशीलता के सबसे महत्वपूर्ण उपकरण की कल्पना की बहुत उपेक्षा की है। यथार्थ का अर्थ यथा तथ्य समझ लिया गया है। 'तमस' इस अपराध से मुक्त है। भीष्म साहनी जानते है कि रचना यथार्थ का निष्क्रिय प्रतिबिंब नही होती। यह यथार्थ की पुनर्रचना होती है और यह पुनर्रचना कल्पनाशीलता से संभव होती है। दृश्य–अदृश्य भौतिक–मानसिक घटना और संवेदना के हर प्रस्तुत प्रसंग में भीष्म साहनी ने इस रचना–शक्ति का उपयोग किया है। 'तमस' के ही बारे में चर्चा करते हुए भीष्म साहनी एक जगह लिखते हैं। "धीरे–धीरे उपन्यास में वास्तविक जीवन से उठाये गए पात्र काल्पनिक पात्रों के सहगामी होने लगते है। सूअर मारनेवाला नत्थू काल्पनिक हैं। नत्थू और उसकी पत्नी दोनो काल्पनिक है। इस तरह यथार्थ और कल्पना घुलनें–मिलने लगते हैं। एक पात्र का काल्पनिक होना और दूसरे का वास्तविक होना इससे कोई फर्क नही पड़ता। दोंनों का विश्वसनीय होना जरूरी है। भीष्म साहनी की कल्पनाशीलता का ही परिणाम है भाषा की सादगी के बाद भी वर्णन सपाट नही होने पाया है। इस उपन्यास की कथा भौतिक और चाक्षुष गतिशीलता से भरी पड़ी है। घटना बहुल और सघन सकर्मक संसार है इस कथा का। भाषा और चित्रण दोनो के सपाट हो जाने के प्रबल खतरों के बीच से भीष्म साहनी ने इस उपन्यास को न केवल निकाल लिया है बल्कि अपनी तरह का एक पृथक और विरल कला–सौन्दर्य भी

उसे उपलब्ध करा दिया है।

तमस का प्रकाशन 1973 में हुआ तमस छपने के बाद उपन्यास कार पर अनेक समीक्षाएँ, टिप्पणियाँ, लेख छपे, लेकिन तमस पर सबसे अच्छी टिप्पणी स्वयं भीष्म साहनी ने उपन्यास रचना के अपने संस्मरणों में की है। भीष्म साहनी उन दिनो स्वयं कांग्रेस कार्यकर्ता थे और कांग्रेस की जिला कमेटी के सदस्य भी। भीष्म साहनी का जन्म और व्यक्तित्व– विकास रावलपिंडी में हुआा था और मार्च 1947 मे रावलपिडी शहर और आसपास के 120 गाँवों में पाँच–छह दिन के सांप्रदायिक दंगें हुए जिन्हें लंखक ने स्वयं नजदीक से देखा था जाहिर है अपने उन दिनों के अनुभवों के आधार पर भीष्म साहनी ने करीब चौथाई सदी बीत जाने के बाद इस उपन्यास की रचना की और इस संबंध मे उनकी टिप्पणी गंभीर ध्यान की माँग भी करती है सन 42 के देशव्यापी भारत छोंड़ो ओंदोलन के बाद स्वतंत्रता संघर्ष की रीढ़ तोड़ने का यह षडयंत्र था और अंग्रेजो के हाथ में साम्प्रदायिकता का हथियार ही सबसे बड़ा हथियार था।"[19]

"तमस उपन्यास को समझने के लिए भीष्म साहनी का स्वकथन अत्यंत महत्वपूर्ण है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने साम्प्रदायिकता के हथियार का इस्तेमाल करके किस प्रकार भारतीय नागरिकों में वैमनस्य का अंधकार फैलाया और जिसका दुष्परिणाम 1947 के भयानकतम दंगों के रूप में सामने आया उसी दुष्परिणाम की एक झलक मार्च 1947 में रावलपिडी के इन पाँच दिन के दंगों में मिलती है जिसे आधार बनाकर भीष्म साहनी ने तमस की रचना की।"[20]

भीष्म साहनी ने अपने इन सेस्मरणों मे उपन्यास और यथार्थ चित्रण के संबंधों को भी व्याख्यायित किया है। उपन्यास में यथार्थ किस कलात्मक प्रक्रिया में नया रूप ग्रहण करता है तमस में चित्रित घटनाओं के संदर्भ में भीष्म साहनी ने लिखा है कि गुरूद्वारे में औरत की कुएँ में कुदने की घटना सच्ची है जो लोहा खालसा गाँव में घटी थी। लेकिन भीष्म साहनी ने यह भी कहा है कि उन्हें सूअर मारे जाने की किसी आँखों देखी घटना का अनूभव नही था सो नत्थू द्वारा सूअर मारे जाने का पुरा दृश्य उन्होने अपनी यथार्थ आधरित कल्पना से गढ़ा। दिलचस्प बात यह है कि उपन्यास और फिल्म दोनो में ही इस दृश्य ने पाठकों को अत्यधिक प्रभावित किया और घटना के नाटकीय स्वरूप ने इस चित्रण को कलात्मक स्तर पर आर्कषक बनाया। तमस को साम्प्रदायिकता के आधार पर लिखा गया एक महत्वपुर्ण उपन्यास माना जाता है। इसमें कोई दो राय नही कि यह उपन्यास धर्मन्धता के क्रूरतम रूपों को चित्रित करता है जो सहिष्णुता और सदभावना को पूरी तरह नष्ट कर देते है। मगर इस उपन्यास को सिर्फ साम्प्रदायिकता और धर्माधंता विरोधी उपन्यास के रूप में नही देखा जाना चाहिए। तमस वास्तव में उस सत्ता के कुचक्रों की भी कहानी है जो अपने स्वार्थ के लिए किसी भी सीमा तक जा सकती है। इस अर्थ में तमस हमारे समय में भी प्रासंगिक दस्तावेज की तरह बना हुआा है। अपनी विशेषताओं के कारण तमय एक कालजयी उपन्यास बन गया है।

संदर्भ – ग्रंथ

1. 'दस्तक' पत्रिका, 5 अक्टूबर 1994, पृ 54
2. 'भीष्म साहनी' रचना और व्यक्ति लेखक अमरकांत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 1997 पृ 246
3. वीरेन्द्र मोहन उपन्यास दृष्टि और मानवीय आस्था (लेख से) पृ 118
4. 'तमस' भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1973 प्रयुक्त संस्करण 1995 पृ 116
5. वही, पृ 117
6. वही, पृ 118
7. 'आलोचना' लेखक विजेन्द्र नारायण सिंह, अप्रैल – सितम्बर 2004 पृ 67
8. 'तमस' भीष्म साहनी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1973 प्रयुक्त संस्करण 1995
9. 'आलोचना' लेखक विजेन्द्र नारायण सिंह, अप्रैल – सितम्बर 2004 पृ 67
10. 'तमस' भीष्म साहनी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रयुक्त संस्करण 1995 पृ 69
11. 'आलोचना' पत्रिका लेखक विजेन्द्र नारायण सिंह, अप्रैल – सितम्बर 2004 पृ 68
12. 'आलोचना' लेखक रमेश दवे अप्रैल, – सितम्बर 2004 पृ 85
13. 'तमस' भीष्म साहनी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रयुक्त संस्करण 1995 पृ 109
14. वही पृ 110
15. 'आलोचना' लेखक रमेश दवे, अप्रैल – सितम्बर 2004 पृ 87
16. 'तमस' भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रयुक्त संस्करण 1995 पृ 83
17. 'आलोचना' लेखक अनिल राय, अप्रैल – सितम्बर 2004 पृ 100
18. वही पृ 100
19. 'तमस' संस्मरण भीष्म साहनी, उद्धत – आधुनिक हिन्दी उपन्यास संम्पादनए भीष्म साहनी व अन्य राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1980 पृ 428
20. 'आलोचना' लेखक चमनलाल, साम्प्रदायिकता उपनिवेशवाद और तमस अप्रैल – सितम्बर 2004 पृ 70